

## असमिया संस्कृति का एक अन्य पहलू : मुखौटा-कला

माधुर्य कमल हजारिका

कला अर्थात सत्य एवं सुंदर। सभी द्रव्यों में शिव हैं और जहाँ शिव हैं वहाँ प्रभा है। जीवन जीना एक कला है और मानव कलाकार। विश्व में भारत अपनी कलात्मक पहचान के लिए कीर्तिमान है, जहाँ सभी राज्य के लोग अपने पृथक परंपरागत कला प्रयोगों से देश को समृद्ध एवं दीप्तिमान बनाते हैं। जम्मू कश्मीर में 'भांड पथेर', गुजरात में "भवाई" एवं तमिलनाडु में 'थीरुकूतू' आदि अनेक नृत्य, नाटक द्वारा इस देश के लोग अपनी कला कुशलता का परिचय देते आ रहे हैं। भारत देश में कला का चरम विकास भक्तिकालीन समय में देखा जाता है, जब भक्ति को जनतामुखी बनाया जा रहा था एवं कला को भक्ति का साधन। उसी काल अवधि में देश के विविध स्थानों पर अनेक संत महात्मा हुए, जिन्होंने अपनी विद्वता का परिचय देकर विभिन्न संप्रदायों को जन्म दिया और जनता को आकर्षित करने के लिए लोक कला को एक सांस्कृतिक रूप देकर रमणीय बनाया। उसी भक्तिवाद से एक स्रोतास्विनी बहकर असम पहुँची जिसे महापुरुषों द्वारा नूतन रूप में जनतामुखी बनाया गया। मध्ययुग में वैष्णव आंदोलन अपने पूरे प्रभाव के साथ जिस प्रकार संपूर्ण भारत में फैला था, उसी का एक विकसित रूप है नव वैष्णव आंदोलन या नव-वैष्णववाद जिसके प्रवर्तन कर्ता एवं प्रचारक हैं श्रीमंत शंकरदेव। कालांतर में इस संप्रदाय का प्रमुख प्रचारक बने उनके अनुयायी एवं प्रिय शिष्य श्री श्री माधवदेव। जाति भेद, वर्ण-भेद, तांत्रिक पूजा पाठ, यज्ञ, बलि विधान आदि अनेक सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ यह आंदोलन असम प्रदेश में अपने पूरे प्रभाव के साथ फैला। बहुदेवोपासना एवं सिद्ध, नाथ की तांत्रिक साधना से जनता त्रासद थी, और धीरे-धीरे भक्ति से मुँह मोड़ने लगी थी, इसी के संबंध में तुलसीदास जी कहते हैं कि-"गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग", मध्यदेश में जिस प्रकार प्रेमभाव और भक्तिरस से शून्य एवं शुष्क पड़ती जनता के एक बड़े भाग को कबीर दास ने अपनी निर्गुण भक्ति से संभाला था उसी प्रकार असम प्रांत में शंकरदेव ने अपने "एक चरण भगवती वैष्णव धर्म" के सहारे लोगो को भक्ति अमृत पिलाने हेतु पुनः खींच कर लाये। इस संप्रदाय का मूल मंत्र हैं "एक देव एक सेव एक विने नाइ केव" अर्थात सेवा एवं भक्ति करने के लिए बहुदेव नहीं केवल एक ही देव है जो सच्चिदानंद स्वरूप हैं और उनके बिना कोई दूजा नहीं है। अपनी विपुल संस्कृति के साथ असमिया लोक जीवन में यह संप्रदाय प्रभावशाली रूप से फैला। विस्तृत ब्रजबुलि साहित्य, सत्रीया नृत्य, बरगीत एवं अपनी विविध कला परंपरा के साथ यह संप्रदाय समृद्ध हैं। साहित्य रचना के लिए पत्रों का निर्माण, नाटकों में धारण करने वाले वस्त्रों का निर्माण, विविध वाद्य यंत्रों का निर्माण, काठ द्वारा विभिन्न द्रव्यों का निर्माण, नाटकों में व्यवहारित मुखौटे कार निर्माण आदि कार्य-कलापों द्वारा असम प्रदेश में उस काल अवधि में कलावाद प्रभावी रूप से फैला। चारु कला, कारु कला, वास्तु-कला, सत्रीया कला, कथन कला, नाट्यकला, निर्माण कला, आदि चौंसठ कलाएं प्रसिद्ध हैं। श्रीमंत शंकरदेव द्वारा इस वैष्णववाद को अधिक प्रभावशाली रूप देने के लिए कला प्रयोगों को संप्रदाय में स्थान दिया। युगनायक श्रीमंत शंकरदेव बहुप्रतिभा

संपन्न व्यक्ति थे, अपनी प्रतिभा का दिव्य स्वरूप उन्होंने नाटकों के सर्जन द्वारा दिखाया, जिसे उन्होंने भाओना नाम दिया। भाओना अर्थात् किसी चरित्र का भाव हुबहू दर्शकों को दिखाना। असम के सामाजिक, अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु भाओना अपने सर्वोत्तम विशेषता के साथ आज भी प्रचलन में हैं।

गायन-वादन द्वारा प्रारंभ इस नवरस बाहक भाओना में मुखौटा-कला एक विशेष भूमिका अदा करती हैं। जगतगुरु श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित इस वैष्णव संप्रदाय में काल के साथ मुखौटा निर्माण एक संस्कृति बनकर उभरा।

भाओना मंचस्थ करते समय कुछ पात्रों का भाव हुबहू दिखाना दुष्कर होता है, जैसे जानवर, राक्षस, पक्षी आदि। मान लीजिए विष्णु के वाहन गरुड़ पक्षी का भाव दिखाना है जिसे साधारण रूप से दिखाना संभव नहीं और इसी कारण मुखौटे का प्रयोग भाओना का एक अभेद अंग बनकर उभरा। पहली बार श्रीमंत शंकरदेव ने ही इस कलाकारी का प्रयोग भाओना मंचस्थ करने के लिए किया। "बुटद्रवा सत्र" के वैष्णवों द्वारा गुरु शंकर को वैकुंठ दर्शन के लिए प्रार्थना करने पर श्रीमंत शंकरदेव ने सप्त वैकुंठ पथ अंकन के साथ-साथ विविध मुखौटे प्रस्तुत कर भक्तों को दिखाया। जहाँ श्री नारायण, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्मा, शिव एवं चौदह परिषद् का मुखौटा तैयार कर भक्तों को इस शिल्प निपुणता का ज्ञान दिया। मुखौटा तैयार करने में गुरु का साथ केताइखा भुयाँ, बलाई, भोबोरा, भीमा आदि भक्तों ने दिया था, इन भक्तों द्वारा कच्चे बाँस की छोटी-छोटी पट्टी तैयार की गयी, नदी से गोंद युक्त मिट्टी लायी गयी (कुम्हार मिट्टी), बाँस की पट्टियों द्वारा मुखौटा का ढाँचा बनाया गया, ढाँचे को कुम्हार की मिट्टी लगाये हुए कपड़े से बड़े सुंदर तरीके से लपेटा गया, शरीर एवं चेहरे के आकार को मुखौटे में देने के लिए गाय, गोबर के साथ मिट्टी मिलाकर कलात्मकता दिखायी गयी, तत्पश्चात् फिर मिट्टी युक्त लेप से लपेटकर धूप में सुखाया गया एवं हेंगुल हाईताल रंगों के प्रयोग से मुखौटे को संपूर्णता प्रदान की गयी। निर्धारित दिन में श्री शंकर द्वारा भाओना, गीत, खोल-ताल, आदि के सहयोग से प्रथम भाओना (नाटक) "चिह्नयात्रा" सात दिन सात रात तक अविरत रूप से खेला गया। इस आयोजन में जिन भक्तों ने गुरु का साथ दिया उनमें प्रमुख हैं-भीमा बायन, रमाई, गोविन्द, बढार पो (माधवदेव), सापेखोवा गोविन्द, बलाई, भोबोरा आदि। यही था गुरु शंकरदेव द्वारा किया गया मुखौटे का पहला प्रयोग। फिर समय के साथ उनके विभिन्न नाटकों में मुखौटों का व्यवहार होने लगा। जैसे उनके द्वारा लिखित नाटक "राम विजय" में मारीच, सुबाहु, तारका, "रुक्मिणी हरण" नाटक में गरूर पक्षी, "पारिजात हरणे" नाटक में नरकासुर, मुरदानव, "केलिगोपाल" नाटक में शंखसुर, "कालिया दमन" नाटक में काली एवं नाग पत्नी आदि पात्रों को मुखौटे में देखा जाता है। इस शिल्पकला का प्रभाव असम के बराक, ब्रह्मपुत्र दोनों उपद्वीपों में फैला। आज पुरुषोत्तम शंकरदेव के असीमित अवदानों के कारण असमिया समाज एवं सत्रानुस्थान संपन्न हैं। कालांतर में विविध पुराण एवं रामायण, महाभारत की कहानियों, नाटकों आदि के मंचन में मुखौटे का व्यवहार अपने संपूर्ण प्रभाव के साथ हुआ। इस नीति परंपरा का वाहक प्रमुख सत्र हैं माजुली के "सामागुरी सत्र" जहाँ गुरु द्वारा दिया गया इस अपूर्व संस्कृति का पालन आज भी संपूर्ण समर्पण के साथ किया जाता है। सत्राधिकार श्री कोषकांत देव गोस्वामी की अगाध भक्ति एवं निष्ठा के कारण आज यह मुखौटा-कला विश्व भर में प्रसिद्ध है। उन्होंने परंपरागत

मुखौटा-कला को एक नया रूप दिया एवं उसे और अधिक आकर्षक बनाया, फलतः उन्हें संगीत नाटक अकादमी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

आकार के आधार पर सत्रों में कई प्रकार के मुखौटे देखे जाते हैं, जिनमें प्रमुख हैं "वरमुखा या चोमुखा" लोतोकाई मुखा" और "मुख मुखा"। "वरमुखा" बृहत् आकृति का बनाया जाता है, इसे संपूर्ण शरीर में धारण किया जाता है। जैसे "नृसिंह यात्रा" नाटक में प्रभु नरसिंह का रूप, रावण का दसमुखी मुखौटा, कुम्भकर्ण, इन्द्रजीत, बाण राजा, नरकासुर, अधासुर, बकासुर आदि। उससे थोड़ा छोटा मुखौटा जिसे मुख एवं शरीर के कुछ अंशों में धारण किया जाता है उसे "लोतोकाई मुखा" कहते हैं, जैसे "नृसिंह यात्रा" नाटक में प्रभु बराह का रूप, धेनुकासुर, काली दमन नाटक में काली नाग का मुखौटा आदि और अंतिम प्रकार है "मुख मुखा" जो केवल मुख मंडल में पहना जाता है। इसे आग्रहीजन विभिन्न सत्रों के संग्रहालयों में देख सकते हैं, मुख-मुखा में प्रसिद्ध पूतना, शंखसुर, मारीच, सुबाहु, चक्रबात, सूर्णखा आदि। मुखौटा तैयार करने के लिए मुख्यरूप से कच्चा बाँस, बेत, कुम्हार मिट्टी, कपड़े, कुहिला एवं मरपात (असम के वनों में उपलब्ध बाल जैसा पदार्थ, जिसे कातकर सुखाने पर बाल के रूप में व्यवहार किया जा सकता है) का प्रयोग किया जाता है। सत्रों में वैष्णव गणों द्वारा कठोर मेहनत से मुखौटा तैयार कर उसे उपयोगी बनाया जाता है। पहले कच्चा बाँस से धारदार चाकू द्वारा छोटे आकार में पट्टियों को तैयार किया जाता है, कलात्मकता के साथ उन पट्टियों को गूँथकर मुख एवं बड़े मुखौटे में शरीर का ढांचा तैयार किया जाता है, असम की नदियों के किनारे प्राप्त गोंद युक्त एक प्रकार की मिट्टी जिसे "कुम्हार मिट्टी" कहा जाता है (इस मिट्टी का प्रयोग कुम्हार घट एवं अन्य पात्रों के निर्माण में करता है) उसे कपड़े में मिलाकर बाँस के उस ढांचे में लपेटा जाता है, तत्पश्चात् गाय के गोबर के साथ मिट्टी मिलाकर नाक, मुख, आँख आदि आकार प्रस्तुत किया जाता है, फिर मिट्टी युक्त कपड़े में संपूर्ण मुखौटे को लपेटकर धूप में दो या तीन दिनों तक सुखाया जाता है और अंत में संपूर्ण प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर उस मुखौटे को संपूर्णता प्रदान की जाती है। मुखौटा निर्माण में प्रयोग रंगों में लाल, पीला, नीला, सफेद, काला आदि प्रमुख हैं जो प्राकृतिक उपादानों द्वारा बनाया जाता है। लाल रंग हेंगुल (Mercury sulphide) नामक एक धातु द्वारा एक लम्बी प्रक्रिया के तहत बनाया जाता है, उसी प्रकार पीला रंग हाईताल (Arsenic sulphide), नीला रंग नील वृक्ष (Indigo plant), सफेद रंग खरिमाती या चन्दन वृक्ष द्वारा बनाया जाता है। यह तो हुई प्रस्तुतीकरण की बात, अब प्रयोग के बारे में बात करते हुए दोनों गुरुओं का एक अपूर्व सृष्टी "सत्रानुस्थानों" के बारे में थोड़ा चर्चा कर लेते हैं। मध्यकाल में दोनों गुरुओं द्वारा भक्तिवाद के प्रचार-प्रसार के लिए सत्रों की स्थापना की, जहाँ आज भी प्रबल गति के साथ वैष्णव भक्ति धारा प्रवाहित है। कीर्तन, दसम आदि ऐतिहासिक पोथियों का पाठ, नित्य नृत्य, नाट आदि का अभ्यास एवं अपनी अमिट सत्र परंपराओं से साथ आज भी असमिया लोकजीवन में सत्र एक प्रभावी अवस्थिति के साथ विद्यमान हैं। जहाँ वास करते भक्तगण आजीवन ब्रह्मचारी व्रत का पालन कर उन सत्रिया परंपराओं को आगे बढ़ाते आ रहे हैं। प्रमुख परंपराओं में भाओना मंचन एक अपूर्व कला प्रस्तुति के रूप में देखा जाता है। जहाँ भगवान के सभी अवतारों का साक्षात् दर्शन भक्तगण करते हैं। इन नाटकों को मुख्यतः दोनों गुरुओं द्वारा रचित माना जाता है। श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित नाटक हैं- पत्नी प्रशाद, केलिगोपाल, कालिया दमन, रुक्मिणी हरण, पारिजात हरण और राम विजय एवं माधवदेव

द्वारा रचित नाटक हैं- भूमि लोटोआ, पिम्परा गुसुआ, दधि मंथन, अर्जुन भंजन आदि। कालांतर में दोनों गुरुओं के अनुयायियों द्वारा वैष्णव धर्म प्रचार के लिए एवं असमिया सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने हेतु अंकिया नाट शैली आधारित विभिन्न भक्तिमूलक नाटकों को रचा। फलतः गाँव देहातों में लोगों ने अपने तरीके से विविध नाटकों को खेलना शुरू किया। नाटकों में प्रयोग विविध पदार्थों के प्रयोग से प्राकृतिक निर्माण की प्रक्रिया असम प्रांत में एक अनोखी कला संस्कृति बनकर उभरी। भाओना में प्रयोग वस्तुओं में मुखौटा, धनु, गदा, तलवार, भाला, त्रिशूल, असमिया साज-सज्जा, प्राकृतिक रंग, प्रकाश के लिए मेंटोल लाइट आदि प्रमुख हैं। नाटकों के प्रचार के साथ मुखौटा निर्माण भी असमिया समाज व्यवस्था में विस्तृत रूप से फैली। सत्रों में, गाँव-देहातों में मुखौटा निर्माण लोग प्रसन्नता के साथ करते हैं, जहाँ असमिया कला संस्कृति बखूबी उभरकर आती हैं। असम प्रांत में प्रायः प्रत्येक नाटकों में मुखौटे का प्रयोग देखा जाता है, बाँस द्वारा निर्मित इन मुखौटों का भार अति लघु होने के कारण इन्हें पहनकर नाटक में अभिनय करना उतना कठिन नहीं, फिर भी पारंगत लोगों को ही मुखा पहनकर निर्दिष्ट भाव करने दिया जाता है। भाद्र महीने में सत्रों में "बारसोआ नाटक" खेला जाता है जिसके अधीन बारह नाटकों का प्रदर्शन होता है जहाँ मुखौटे का प्रयोग अनिवार्य है।

असम के माजुली नदी द्वीप में मुखौटा निर्माण परंपरा अपनी पूर्णता के साथ आज भी विद्यमान है, जहाँ प्रत्येक सत्र अनुष्ठानों में, मठ मंदिरों में, व्यक्तिगत घरों में मुखौटा निर्माण प्रचलन में है। माजुली नदी द्वीप को सत्र नगरी, मणिकांचन भूमि, एटोका महंतर थल आदि नामों से जाना जाता है। मध्यकाल में इसी अमृत भूमि पर स्थित "धुआहात बेलगुरी" नामक स्थान पर शंकरदेव और माधवदेव का मणिकांचन मिलन हुआ था। इसी कारण इस अपूर्व भूमि का नाम मणिकांचन भूमि पड़ा। दोनों गुरुओं ने संपूर्ण असम प्रदेश में प्राय 665 सत्रों की स्थापन हुई, उनमें से माजुली में एक साथ सबसे ज्यादा 64 सत्रों की स्थापन हुई। इसीलिए इस नवनीत भूमि को सत्र नगरी के नाम से भी जाना जाता है। वैष्णव समाज के साथ अन्य शिक्षित समाज का एक स्थान पर मिलन के फलस्वरूप इस अमृत भूमि में कला को एक अलग पहचान मिली। केवल मुखौटा कला ही नहीं, सांस्कृतिक नृत्य, गान, नाटक एवं अपने ऐतिहासिक "साँचीपात साहित्य" के साथ इसे असम की सांस्कृतिक राजधानी माना जाता है। प्रत्येक वर्ष ब्रह्ममपुत्र नदी की भीषण बाढ़ के कारण यह नदी द्वीप धीरे-धीरे समाप्त होने को हैं। मध्यकाल में जिस भूमिखंड का आकार 1245 वर्ग किलोमीटर था, वह आज घटकर प्रायः 400 वर्ग किलोमीटर पर पहुँच गया है। फलस्वरूप आज इस नदी द्वीप में केवल 36 सत्र मौजूद हैं। अपने अनेक प्राकृतिक संकट के बावजूद यहाँ वास करते लोग आज भी संपूर्ण समर्पण के साथ कला प्रस्तुति में लगे हुए हैं। निर्माण सामग्री के आधार पर माजुली नदी द्वीप में मूलतः तीन प्रकार के मुखौटे देखे जाते हैं। काठ द्वारा निर्मित मुखौटा, बाँस द्वारा निर्मित मुखौटा और बेंत द्वारा निर्मित मुखौटा। बाँस द्वारा निर्मित मुखौटा जिसका प्रयोग कलाकार नाटक प्रदर्शन में करते हैं, ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। काठ द्वारा निर्मित मुखौटा जिसे छोटे या बड़े आकार का भी बनाया जाता है। मूलतः सजावट के लिए व्यवहार किया जाता है। सत्रों में भक्तों के गृहों को "बहा" कहा जाता है और लगभग सभी सत्रों के सभी बहाओं के प्रवेश द्वार पर काठ द्वारा निर्मित दो हिरन के मुखौटे रखे होते हैं, जिसका उद्देश्य मूलतः सजावट ही हैं। इसके अतिरिक्त बेंत (असम के वनों में प्राप्त एक प्रकार

के कटीले पेड़ जो बहुत ही लचीले होते हैं, इसका प्रयोग लोग छोटी-छोटी पट्टी बनाकर रस्सी के रूप में भी करते हैं) द्वारा निर्मित मुखौटे का प्रयोग भी सामान्यतः सजावट के लिए ही किया जाता है। अनेक महोत्सवों में प्रवेश द्वार के दोनों ओर अक्सर दो बेंत द्वारा निर्मित गायन-बायन के मुखौटे देखे जाते हैं। सामागुरी सत्र में भी दर्शकों के लिए दो बेंत द्वारा निर्मित मुखौटा प्रदर्शित हैं। वर्तमान समय में सीमेंट द्वारा भी बड़े-बड़े मुखौटे बनाये जाते हैं। जैसे लोहित नदी के पास सीमेंट द्वारा रावण का एक वृहताकार मुखौटा अभी निर्माण प्रक्रिया में है। युग के साथ-साथ जिस प्रकार असमिया भक्तगण एक चरण भगवती वैष्णव धर्म के प्रभाव विस्तार में समर्पित हैं, उसी प्रकार इस मुखौटा संस्कृति के ध्वजवाहक स्वरूप वे कार्यरत हैं।

श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रचारित यह महान मुखौटा संस्कृति आज केवल भाओना तक सीमित नहीं हैं। भक्तगणों द्वारा किये गए असीमित प्रयास के फलस्वरूप आज संपूर्ण विश्व में इस कलाकारी का आदर हैं। कई विदेशी संग्रहालयों में असम में निर्मित मुखौटों को स्थान मिला है। आधुनिकता से प्रभावित युवा पीढ़ी परंपराओं के ग्रहण को अनुपयोगी समझती है। फलतः कई स्थानों पर यह संस्कृति एक पीढ़ी तक सीमित हो गयी और कई स्थानों पर लुप्त। संख्या की दृष्टि से सबसे ज्यादा मुखौटा आज माजुली के सामागुरी सत्र में विद्यमान हैं। यह वही सत्र है जहाँ श्रीमंत शंकरदेव के शिष्य "चक्रपानी आता" द्वारा आहोम राजा "चक्रध्वज सिंह" के आदेश पर सन् 1993 में मुखौटा निर्माण कला प्रारंभ की गयी। जहाँ आज भी उस संस्कृति के वाहक बने हुए हैं यहाँ के सत्राधिकार डॉ. हेमचन्द्र गोस्वामी देव। उनका मानना है कि हम इस पौराणिक संस्कृति को कभी खत्म नहीं होने देंगे। यह एक गृहस्थ सत्र है जहाँ आज लगभग 50 परिवार वास करते हैं। प्रायः 400 साल की यह सभ्यता आज यहाँ निवास करते भक्तों के कारण लुप्त होने के स्थान पर अधिक समृद्ध एवं प्रचलित है। पिता पूर्व सत्राधिकार रुद्रकांत देव गोस्वामी से शिक्षा ग्रहण कर हेमचन्द्र गोस्वामी आज असम एवं भारत के एक प्रसिद्ध मुखौटा-कलाकार बने। कला विस्तार के लिए आज सत्राधिकार देव अपने सत्र में ही लगभग 500 छात्रों को मुखौटा प्रशिक्षण रोज देते हैं। इसके अलावा देश एवं विदेश के विभिन्न स्थानों पर आपने इस कला का दिव्य प्रचार नए पीढ़ी में किया है। प्राकृतिक संसाधनों से निर्मित इस अद्भुत कलाकारी को विश्व पटल पर लेकर जाने का श्रेय अनेक कार्यरत वैष्णवों के अतिरिक्त सत्राधिकार डॉ. हेमचन्द्र गोस्वामी देव को देना होगा। अपने कई वर्षों की साधना के फलस्वरूप वह मुखौटे को आधुनिक रूप देने में सक्षम हुए। महापुरुषों द्वारा निर्मित मुखौटा संवाद कथन के लिए असक्षम थे, उसके मुँह मंडल में धारक किसी भी प्रकार का संचलन नहीं कर सकता। इसी समस्या को ध्यान में रखकर गोस्वामी देव द्वारा मुखौटे में आधुनिकता प्रदान की गयी और उसे नाटकों में संवाद के लिए उपयोगी बनाया गया। उन्होंने जड़ मुखौटों में जैसे जान ही डाल दी। सामागुरी सत्र में परंपरा से "मुखा भाओना" प्रचलित है जहाँ सभी पात्र मुखौटा धारण कर अभिनय करते हैं। इस सत्र में रास पूर्णिमा के दिन मुखौटा रास के साथ-साथ महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है। संवाद कथन के लिए उपयोगी मुखौटों के निर्माण के बाद मुखा भाओना और भी आकर्षक बना। मुखा भाओना को राष्ट्रीय मर्यादा प्रदान कर सन् 2018 में इसे गणतंत्र दिवस के दिन दिल्ली राजपथ पर दिखाया गया था। वर्तमान समय में मुखौटों का उपयोग नाटकों के अलावा सजावट के लिए, उपहार एवं भेद के रूप में और

खिलौने के रूप में भी किया जाता है, इसी कारण यह आज अर्थ प्राप्त का भी एक साधन बना। यह एक सुखद बात है कि बाजारीकरण की वजह से लुप्त, होती मुखौटा कला को एक नया आगाज मिला। आज यह कलाकारी अनेक लोगों के लिए संस्थापन का एक साधन बनी हुई है। महापुरुषों के वरदान स्वरूप असमिया सांस्कृतिक क्षेत्र जिसमें समाहित हैं नृत्य, गीत, भाओना, मुखौटा कला एवं अनंत वैष्णव भक्ति जिसका वहन निरंतरता के साथ वर्तमान समय तक चलाये रखना अद्वितीय एवं ललित प्रयास हैं, जिसका मूल श्रेय असम के विभिन्न सत्र अनुष्ठानों को जाता है, अविराम रूप से संपूर्ण समर्पण के साथ भक्तगण दिन-रात भक्ति रस फैलाने एवं परंपराओं को चलाये रखने के लिए प्रयासरत हैं। अपने बहुआयामी विशेषताओं के चलते यह भक्तिकालीन संप्रदाय आज संपूर्ण प्रभाव के साथ असमिया जन-जीवन में विद्यमान हैं। पौराणिक कला संस्कृति हमारा स्वाभिमान एवं गौरव है, अतः इसे समृद्ध बनाना, इसमें आधुनिकता प्रदान करना एवं इसे विस्तारित करने का पूर्ण दायित्व युवा पीढ़ी पर हैं। मुखौटा संस्कृति के साथ-साथ संपूर्ण वैष्णव संस्कृति केवल माजुली या असम का गौरव नहीं है, अपितु संपूर्ण भारत के लिए एक अद्वितीय संपदा हैं।

### संदर्भ

1. भक्तिरस : संपादक रणजीत भुयां
2. मुक्तिसाधकम: संपादक बोधेश्वर शङ्किया
3. असमर मुखा संस्कृति आरू इयार परंपरा : कोषकांत देव गोस्वामी
4. कला आरू भाओनार छो मुखा बंशीधर बोरा
5. श्रीमंत शंकरदेव सृष्टीत मुखा संस्कृति प्रसन्न गोस्वामी
6. कमलाबाड़ी सत्र: सत्रिया नृत्य प्रसंग श्री करुणा बोरा

### साक्षात्कार :

1. डॉ. हेमचन्द्र गोस्वामी सत्राधिकार सामागुरी सत्र, मुखौटा कलाकार ।
2. मुहिकांत बोरा : वैष्णव उत्तर कमलाबाड़ी, सत्रिया शिल्पी,
3. पद्मश्री गोपीराम बरगायन वैष्णव उत्तर कमलाबाड़ी सत्र

### सहायक :

1. अप्युत काकती : वैष्णव, उत्तर कमलाबाड़ी सत्र
2. किरण हजारिका इतिहास अध्येता, माजुली कॉलेज, माजुली

माधुर्ज्य कमल हजारिका

माजुली, असम